# 9

# 'शब्द' की परिभाषा तथा उसके अर्थ-प्रतिपादन का परिप्रेक्ष्य: हिन्दी के विशिष्ट संदर्भ में

- रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव

एक भाषिक इकाई के संदर्भ में 'शब्द' को सामान्यत: बहुआयामी कार्य के रूप में देखा जाता रहा है (Chao, 1966)। एक ओर परम्परागत व्याकरणिक सिद्धांत 'शब्द' को सर्वोपरि इकाई स्वीकार करता है, तो दूसरी ओर आधुनिक भाषाविज्ञान इसे द्विअर्थक एवं विरोधाभाषी स्थितियों में रखकर देखता है (Lyons, 1968, Mathews, 1974)। भाषा अध्ययन के परम्परागत दृष्टिकोण के आधार पर 'शब्द' को व्याकरण की सैद्धांतिक एवं संक्रियात्मक इकाई मानते हुए रूपविज्ञान एवं वाक्यविज्ञान के स्तर पर स्वीकार किया गया; अर्थात् रूपवैज्ञानिक धरातल पर इसे बाह्य शब्द-संचरना या शब्द रूप से जोड़ा गया और वाक्यीय धरातल पर अंतर शब्द-घटना के रूप में इसे भाषा संगठन का प्रमुख तत्त्व माना गया। पारदर्शी एवं बोधन-क्षमता से जुड़े रूपिम सिद्धांत में शब्द को व्युत्पन्न माना गया। इतना ही नहीं, भाषाविज्ञान में इसे 'रचना' माना गया और समाज भाषाविज्ञान में इसे पदावनत किया गया (Greenberg, 1957 : 27)। इसीलिए विभिन्न विद्वान 'शब्द' की संकल्पना को उसकी प्रकृति में विविधरूपी मानते हुए भाषायी विश्लेषण की दृष्टि से इसे पूर्णत: अनुपयुक्त सिद्ध करते हैं (Wells, 1947)। इस संदर्भ में यह एक रोचक तथ्य है कि भाषायी रचना की दृष्टि से 'रूपिम' को शब्द का उचित विकल्प नहीं माना गया है। यहाँ लायन्स (1970: 22) के विचार द्रष्टव्य हैं कि भाषाविज्ञान में 'रूपिम' का प्रयोग व्यापक स्तर पर होने के साथ-साथ अधिकांशत: भ्रमपूर्ण ही है। यहाँ पर भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि रूपवैज्ञानिक एवं वाक्यवैज्ञानिक तथ्यों की चर्चा करते समय परम्परागत वैयाकरण भाषाविश्लेषण के लिए शब्द सापेक्ष दृष्टि का ही निर्वाह करते रहे। आधुनिक भाषाविज्ञान में प्रशिक्षित अनेक विद्वान हिंदी संरचना विश्लेषण के समय, रूपिम या वाक्य के आधार को प्राथमिकता देते देखे जा सकते हैं। यही कारण है कि किशोरीदास वाजपेयी का 'शब्दानुशासन' व्याकरण की व्यापक संकल्पना का पर्याय बन गया है (Vajpeyi, 1966), और काचरू के आलेखों में भी 'शब्द' को कोई निश्चित प्रतिष्ठा देने का प्रयत्न नहीं दिखाई देता। यहाँ शब्द की परम्परागत संकल्पना पर संक्षेप में विचार कर लेना

असमीचीन न होगा, क्योंकि एक और हिंदी वैयाकरणों की पुरानी पीढ़ी व्याकरण की इसी परम्परागत संकल्पना की देन थी, इस तथ्य की जानकारी हमें मिलती है, और दूसरे इस संदर्भ में हम शब्द की प्रकृति एवं प्रकार्य पर हुई विचारोत्तेजक चर्चाओं से भी सीधे जुड़ पाते हैं।

भारतीय व्याकरण सिद्धांत में 'शब्द' को मुख्य एवं सर्वोपरि इकाई के रूप में स्वीकार किया गया है। इस धारणा के परिप्रेक्ष्य में ही भाषा के सिद्धांत, व्याकरण एवं शब्दकोश निर्मित किए गए हैं। यहाँ यह भी स्वीकार किया गया है कि भाषा की सर्जनात्मक बुनावट में शब्द ही आधार है तथा शब्द भाषा के वे पूर्वनिर्मित तत्त्व हैं, जिनके आधार पर क्रमशः बड़े भाषिक खंड, जैसे पदबंध, उपवाक्य, वाक्य इत्यादि निर्मित होते हैं। व्याकरण इन खंडों की व्याकरणिक संरचना के अध्ययन का ही नाम है। इसी संदर्भ में 'शब्द' की संज्ञा आई तथा इसकी सम्पूर्ण विक्रास-सूची को किसी भाषा का 'शब्दकोश' कहा गया। यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि 'शब्दकोश' में प्रयुक्त 'शब्द' तथा वाक्य में प्रयुक्त शब्द (पद) प्रकार्य के धरातल पर सर्वथा भिन्न हैं। इसलिए पद वे शब्दरूप हैं, जो रूप-वाक्यात्मक गुणों से युक्त होते हैं। इस संदर्भ में निम्नलिखित चारों वाक्यों में 'लड़का' कोशीय इकाई की दृष्टि से एक है, परन्तु चार भिन्न अभिव्यक्ति के रूप में ये चार भिन्न पदों के रूप में दिखाई देते हैं-

(1) लड़का बोल रहा है। (एकवचन कर्ता कारक)?
(2) लड़के बोल रहे हैं। (बहुवचन कर्ता कारक)
(3) लड़के को बुलाओ। (एकवचन कर्म कारक)
(4) लड़कों को बुलाओ। (बहुवचन कर्म कारक)

यह कहना कि 'लड़का', 'लड़के', 'लड़के को', 'लड़कों को' एक ही मूल शब्द के चार भिन्न रूप-वाक्यात्मक रूप हैं और 'लड़की' अपनी रूपात्मक संरचना में एक भिन्न शब्द है, शब्द को अमूर्त रूप से परिभाषित करना है। इस अमूर्त अर्थ में 'शब्द' का अभिप्राय आधुनिक संकल्पना 'शब्दिम' के समतुल्य हो जाता है, क्योंकि 'शब्दिम' विभिन्न रूपांतरित 'रूपों' (पदों) के माध्यम से रूप-वाक्यात्मक नियमों के अनुसार वाक्यों का निर्माण करते हैं।

'शब्द' शब्दिम के रूप में तथा पद के रूप में 'उक्ति' के अंग नहीं माने गए हैं: ये कुछ भाषायी प्रक्रिया के परिणाम हैं, उदाहरण के लिए कुछ निम्नलिखित उदाहरण देखे जा सकते हैं-

(5) लड़का जाता है।
(6) लड़का जा रहा है।
(7) लड़का गया।

उपर्युक्त वाक्यों में ध्वन्यात्मक भेद तथा वाक्यात्मक प्रकटीकरण का भेद होते हुए भी तीनों वाक्यों में शब्दिम 'जाना' (to go) को समान माना जा सकता है, जबकि वाक्यात्मक इकाई (पद) के धरातल पर तीनों ('जाता', 'जा रहा' और 'गया') भिन्न इकाइयाँ (items) हैं। इस संदर्भ में उदाहरणस्वरूप वाक्य-6 को देखा जा सकता है, जिसमें शब्दिम 'जा रहा' ध्वनि तथा वर्तनी के धरातल पर तो दो भिन्न इकाइयों 'जा' और 'रहा' द्वारा संघटित है, जबकि 'पद' के रूप में यह एक ही इकाई है।

(5[1]) # # जा + पक्ष (स्वाभाविक) + संज्ञा पद संकेतक # काल #

(6[1]) # # जा + पक्ष (सातत्य) + संज्ञा पद संकेतक # काल #

(7[1]) # # जा + पक्ष (पूर्णता) +संज्ञा पद संकेतक # काल #

(+ = रूपिम सीमा, # = वर्तनी की दृष्टि से शब्द की सीमा; # # = पद की सीमा; वाक्य (7) 'गया' 'जा' क्रिया का सर्वादेशी रूप है)

इस उदाहरण की भाँति ही 'लड़का' शब्द के समस्त पदरूप यथा- 'लड़के, 'लड़के का', 'लड़के के लिए', 'लड़के के बारे में' आदि कोशीय धरातल पर एक होते हुए भी पद के धरातल पर भिन्न इकाइयाँ हैं। और वर्तनी के धरातल पर 'लड़के के बारे में' चार भिन्न शब्दों में लिखा गया है, और साथ ही एक ही पद के ये चार घटक माने जाते हैं। गुरु (1920 : 54) ने शब्द-सीमा के प्रश्न पर विचार करते हुए यह प्रतिपादित किया है कि पद की सीमा प्रत्यय की सीमा के अनुरूप होती है, अर्थात् उस प्रत्यय के अनुरूप जिसके उपरान्त कोई प्रत्यय नहीं जोड़ा जा सकता।

यदि अभिव्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो यह कहा जा सकता है कि शब्द किसी भाषा की पूर्व संरचित इकाई है और पद-संचरना प्रक्रिया के उपरांत प्रजनित होता है। यदि शब्द की संकल्पना को भाषा के पूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखा जाए (मूल रूप से कोशविज्ञान की दृष्टि

पूर्व संरचित शब्दों को 'अ-व्युत्पन्न शब्द' के रूप में परिभाषित किया गया है, जिन्हें 'रूढ़' की संज्ञा दी गई है। उदाहरण के लिए 'लड़का', 'नाक', 'पीला' आदि शब्द इसी श्रेणी के हैं। इसके विपरीत जो शब्द किसी-न-किसी संरचना प्रक्रिया के परिणामस्वरूप निर्मित होते हैं, उन्हें 'यौगिक' की श्रेणी में रखा जाता है। यौगिक शब्दों को शब्द निर्माण की प्रक्रिया के स्तर पर दो भागों में बाँटा जा सकता है: व्युत्पन्न शब्द और सामासिक शब्द। पहली प्रक्रिया व्युत्पन्न शब्दों को प्रजनित करती है और दूसरी सामासिक शब्दों को। पहली प्रक्रिया रूढ़ शब्दों द्वारा नए शब्द-निर्माण तक सीमित है, जैसे-पीलापन = # पीला + पन #; लड़कपन = # लड़क + पन #, जबकि दूसरी प्रक्रिया उन सभी प्रकारों को अपने भीतर समेटती है, जिनमें दो या दो से अधिक शब्दों के सामंजस्य से नया शब्द बनता है, जैसे- रसोईघर = # रसोई + घर #, घुड़सवार = # घोड़ा + सवार # आदि।

व्युत्पन्न एवं सामासिक शब्दों की कोशीय स्थिति के विषय में हिंदी वैयाकरणों के विचार भी यहाँ असमीचीन न होंगे। इन विचारों पर चर्चा करने से पहले शब्दकोश एवं व्याकरण के परिप्रेक्ष्यों पर भी चर्चा कर लेनी चाहिए। मूलत: सम्पूर्ण भाषा-क्षेत्र को दो धरातलों पर विभाजित किया गया है- शब्दकोश और व्याकरण। 'शब्दकोश' विचारों की स्वायत्त वस्तुओं का विशेष विवरण है और व्याकरण वस्तुओं के बीच के सम्बन्धों की अभिव्यक्ति है। शब्द भाषा की इकाई है और संक्रिया के धरातल पर इसके दो भिन्न पक्ष हैं- कोशीय शब्द (शब्दिम) और व्याकरणिक शब्द (प्रकार्यात्मक शब्द); अत: भाषा के समस्त सहायक शब्द (auxiliary), यथा- परसर्ग, संयोजक, कोप्यूला, सर्वनाम आदि शब्द मात्र व्याकरणिक शब्द के रूप में स्वीकृति पाते हैं, अत: इन्हें शब्दकोश अपने भीतर नहीं समेटता। हिंदी के संदर्भ में यह एक ध्यातव्य तथ्य है कि उसका एक ही शब्द स्वप्न-प्रक्रियात्मक दृष्टि से एक संदर्भ में कोशीय तो दूसरे में व्याकरणिक भी होता है–

(8) लड़का घर जाता है।

(9) लड़के से खाया नहीं जाता।

वाक्य (8) में हिंदी शब्द 'जा' की कोशीय स्थिति 'जाना' के अर्थ में स्वीकृत है, जबकि वाक्य (9) में यह शब्द निष्क्रिय चिन्हक (passive marker) बनकर पूर्णत: व्याकरणिक बन जाता है। इस संदर्भ में बेस्क्रोव्नी (1960) का विवेचन देखा जा सकता है जिसमें वे 'रह' (ना) की तीन भिन्न परिणतियाँ स्थापित करते हैं: कोशीय धरातल पर to live

के अर्थ में; व्याकरणिक धरातल पर अपूर्ण कालिक पक्ष चिन्हक के रूप में तथा सामासिक धरातल पर स्थिति के नैरंतर्य के संदर्भ को अभिप्रेरित करने के अर्थ में।

इस प्रकार कोशीय इकाई के रूप में शब्द सदैव अर्थीय संक्रिया से बंधा होता है। शब्द की यह अर्थीय परिभाषा ही उसे विचारों की स्वायत्त इकाई के रूप में स्थापित करती है। इसीलिए शब्दों के बहुवचन साधितों, को 'लड़का', 'घोड़ा' के संदर्भ में एक ही कोशीय एकक (item) के दो रूप माना जाता है, जबकि इन्हीं के स्त्रीलिंगबोधक साधितों, यथा– 'लड़की', 'घोड़ी' को दो भिन्न कोशीय इकाइयों के रूप में स्वीकृत किया जाता है। इस पक्ष को निम्नलिखित (10) और (11) में दिए गए युग्मों के संदर्भ में देखा जा सकता है–

(10) चाम चमार

लोहा + आर (व्यवसायसूचक प्रत्यय) = लुहार

सोना सुनार

(11) आम अमिया

खाट+इया (अल्पार्थक प्रत्यय) = खटिया

पुल पुलिया

जैसा कि श्रीवास्तव और गुप्ता (1968) ने विवेचित किया है कि दोनों युग्मों के व्युत्पन्न शब्दों की कोशीय स्थितियाँ भिन्न-भिन्न हैं। प्रकार (10) में दिए गए शब्द युग्म दो भिन्न कोशीय एकक हैं, क्योंकि दोनों दो भिन्न स्वायत्त विचारों को व्यक्त करते हैं और प्रकार (11) के युग्म एक ही कोशीय इकाई के दो विकल्प हैं। शब्द की अर्थीय परिभाषा बहुअर्थक (polysemous) और समस्वनिक (homophonous) शब्दों को भिन्न शब्द मानती है न कि विभिन्न आर्थी एवं प्रकार्यी एककोशीय इकाई। परिवर्णी शब्द (acronyms) तथा यौगिक शब्द शब्द ही हैं, यद्यपि वे अर्थीय हो सकते हैं। परिवर्णी शब्द उस सृजन-प्रक्रिया के परिणाम हैं जिसमें दो या दो से अधिक शब्दों का संक्षिप्तीकरण होता है। प्रत्येक परिवर्णी शब्द के साथ दो या दो से अधिक शब्दों का एक पदबंध रहता है जैसाकि श्रीवास्तव एवं चोपड़ा (1983) ने दिखाने का प्रयत्न किया है कि जब एक परिवर्णी शब्द का सृजन व मानकीकरण हो जाता है तो उसे एक स्वायत्त-स्वतंत्र शब्द

का स्थान मिल जाता है। उदाहरण के लिए हिंदी में हमारे पास आंसुका (आंतरिक सुरक्षा कानून), भालोद (भारतीय लोक दल) आदि परिवर्णी शब्द हैं जो अपने रूप व प्रकार्य में वास्तविक शब्द की भाँति ही हैं, जबकि इनके साथ पदबंधीय व्याख्या भी सम्भव है। इसी प्रकार हिंदी के यौगिक शब्दों को जो सामान्यत: समाज-प्रक्रिया द्वारा निर्मित होते हैं उन्हें बाह्य रूप-प्रकार्य के आधार पर ही शब्द माना जाता है। साधारणतया ये वाक् (parole) की ही इकाइयाँ हैं जिन्हें सम्बन्धित भी कहा जा सकता है। इस प्रकार 'सुख-दुख', 'चर-अचर', 'देशभक्ति' जैसे यौगिक शब्द तथा संधि-प्रक्रिया द्वारा निर्मित शब्द, यथा– 'सूर्यास्त' (सूर्य + अस्त), 'शुभेच्छु' (शुभ + इच्छु), 'यहीं' (यह + ही) आदि वाक् प्रक्रिया के अंग हैं और इसीलिए ये 'लांग' के अंतर्गत नहीं रखे जाते।

यह एक रोचक तथ्य है कि यौगिक शब्दों में विचारों की स्वायत्त इकाई के रूप में कार्य करने की क्षमता होती है। इस प्रकार की क्षमता से युक्त शब्दों को गुरु ने योगरूढ़ शब्द कहा है अर्थात् वे शब्द जो वितरण द्वारा यौगिक शब्द बनते हैं या संकेत (sign) वर्णन द्वारा, परन्तु अपने कोशीय प्रकार्य के संदर्भ में ये सरल (simplex) होते हैं (गुरु, 1920)। उदाहरण के लिए हिंदी के 'जलवायु', 'आबोहवा', 'कामदेव', 'कालीमिर्च' आदि। इस प्रकार के कुछ यौगिक शब्द अपने संघटकों के अर्थ से अतिक्रमण भी करते हैं, जैसे-'दालचीनी'।

यौगिक शब्द एक ओर तो योजक चिन्हों द्वारा व्यक्त होते हैं और दूसरी और उन्हें एक ही शब्द के रूप में समन्वित माना जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में इस प्रकार के यौगिक शब्दों में प्रयोग की दृष्टि से कई विकल्प देखे गए हैं। उदाहण के लिए यदि (क) प्रतिव्यक्ति; (ख) प्रतिदिन; (ग) प्रतिबिम्ब-इन तीन शब्दों को ही देखा जाय तो इन्हें शर्मा (1958 : 182) यौगिक शब्द मानते हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के कुछ छात्रों से किए गए सर्वेक्षण से यह तथ्य प्राप्त हुआ कि वे (क) एवं (ग) को क्रमश: द्विशब्द एवं एकशब्द मानते हैं और (ख) के उनके प्रयोग में प्रर्याप्त विविधता देखने को मिली है, क्योंकि कुछ इसे एक शब्द के रूप में लिखते हैं, और कुछ द्विशब्द के रूप में। इसका मूल कारण मानक्रीकरण के अभाव को माना जा सकता है, क्योंकि हमारे परीक्षण में वाक्-व्यवहार के धरातल पर भी इनमें अस्थिरता मिली।

इसे संदर्भ में दो बिंदुओं पर और भी चर्चा कर लेना समीचीन होगा। उदाहरण (क) को अन्य दो उदाहरणों से इस आधार पर भिन्न माना जा सकता है कि किसी अन्य शब्द को

इस यौगिक शब्द के दोनों तत्त्वों के बीच जोड़ा जा सकता है, जैसे 'प्रति दो व्यक्ति'। यह प्रक्रिया (ख) (ग) के संदर्भ में लागू नहीं की जा सकती। दूसरी बात यह भी है कि उदाहरण (ग) ने 'सक्षम शब्द' का स्थान प्राप्त कर लिया है और उदाहरण (ख) इस स्थान को प्राप्त करने के प्रयत्न में है। हमारे सर्वेक्षण में यह भी तथ्य उभरकर सामने आया कि 'प्रत्यक्ष यौगिक' (apparent compound) शब्दों के 'सक्षम शब्द' में बदलने की प्रक्रिया जो जागरूक घेरा बनाती है उसे निम्नांकित रेखांकन द्वारा भी समझा जा सकता है-

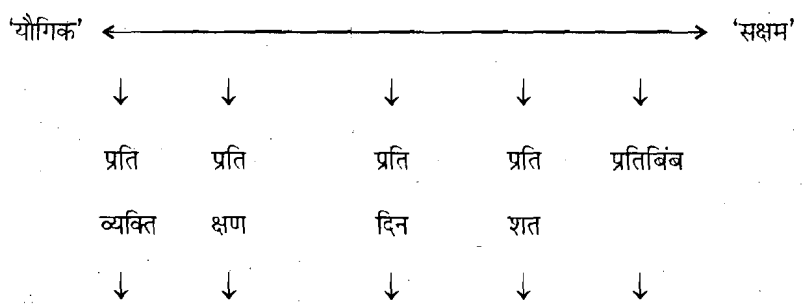


| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एक शब्द | 1 | 6 | 11 | 16 | 20 |
| द्विशब्द | 19 | 14 | 9 | 4 | - |

(प्रत्येक उदाहरण की कुल उपस्थिति की संख्या: 20)

यहाँ यह तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि 'आव-ओ-हवा' में -ओ-'और' अर्थ का द्योतक है और इस योगरूढ़ शब्द में इसका प्रकार्य संयुक्त स्वर की भांति है। इस प्रकार के योगरूढ़ शब्द एक इकाई मात्र इस कारण से नहीं है कि वे अर्थीय धरातल पर स्वायत्त विचार की इकाई हैं, बल्कि इसलिए भी हैं कि वे रूपवैज्ञानिक प्रकार्य के धरातल पर मिश्र और अविभाज्य (composite whole) के समान हैं।

हिंदी वैयाकरणों ने उन सभी पक्षों पर विचार प्रस्तुत किया है जिनके आधार पर सक्षम शब्द और पदबंधीय इकाइयों में भेद किया जा सके (वाजपेयी, 1966; श्रीवास्तव, 1968, 1973)। जिन यौगिक शब्दों में इस प्रश्न को नामिक संयुक्त रूप से व्याकरण की

पदबंधीय इकाई बनाते हैं वहाँ परसर्ग या विशेषण लिंग, वचन या पक्ष पहले तत्त्व के अनुसार संचारित होते हैं। इसके ठीक विपरीत इकाई जहां शब्दकोश का मिश्रित इकाई या 'सक्षम शब्द' की भाँति प्रकार्य करती है, वहाँ विशेषण और परसर्ग द्वितीय तत्त्व के लिंग, वचन और पक्ष के अनुसार संचालित होते हैं। इन दोनों प्रक्रियाओं को इस प्रकार समझा जा सकता है-

(1) पदबंधीय इकाई: परसर्ग # # नामिक$_1$ # # नामिक$_2$ # #

(2) यौगिक शब्द: परसर्ग # # नामिक$_1$ -नामिक$_2$ # #

इस प्रकर 'आब-ओ-हवा' तथा 'जलवायु' कोश की भिन्न इकाइयाँ हैं जिनका प्रयोग हिंदुस्तान की आब-ओ-हवा/जलवायु जैसा पदबंधीय रचनाओं में देखा जा सकता है, जिसमें नामिक ही वह कारण है जिसके आधार पर सम्बन्धकारक 'का' परिवर्तन उसके स्त्रीलिंग रूप 'की' में हो जाता है।

पदबंधीय यौगिक, यथा–काली मिर्च (# # नामिक$_1$ # # नामिक$_2$ # #) तथा सक्षम शब्द 'काली मिर्च' (# # नामिक$_1$ -नामिक$_2$ # #) में जो भेद है उससे वे दो आयाम पर उभरकर सामने आते हैं, जिसके आधार पर भाषिक प्रतीक के रूप में शब्द के दो स्वरूप परिभाषिक होते हैं: कथ्य (signified) और अभिव्यक्ति (signifier)।

अन्य भाषिक इकाइयों की भाँति ही शब्द भी एक भाषिक प्रतीक के रूप में दो भिन्न अभिव्यकित-माध्यमों द्वारा व्यक्त होता है: स्वनिम माध्यम एवं लेख माध्यम। इस प्रकार हमें शब्द की दो अन्य परिभाषाएँ भी प्राप्त होती हैं: स्वनिक/स्वपन-प्रक्रियात्मक तथा लेख/वर्णविन्यास। स्वन-प्रक्रियात्मक शब्द हम उन्हें कहते हैं जिनमें उच्चार के बीच दो विराम रहते हैं जबकि वर्ण-विन्यासात्मक शब्द दो निश्चित विरामों के बीच लिखे जाते हैं। इस संदर्भ में दो प्रमुख तथ्यों पर विचार आवश्यक है। एक तो यह कि शब्द किन्हीं उच्चस्तरीय एवं विशिष्ट भाषिक दृष्टिकोण के माध्यम से आकार ग्रहण करते हैं (Palmer, 1976 : 9)। उदाहरणस्वरूप देखा जाय तो मौखिक-सम्प्रेषण में निरंतरता पार्थक्यता का स्थान लेती है। शब्दों या शब्दों के समुच्चय के उच्चार में उच्चारण की ही भाँति ध्वनि-तरंगें सातत्यक (continuum) होती हैं। और शब्द की एक पृथक इकाई के रूप में पहचान श्रोता द्वारा कुछ भाषायी व्याख्या के आधार पर ही हो पाती है। वास्तव

में शब्द क्या है इस प्रश्न पर सबकी भिन्न धारणाएँ होती हैं, जिनके आधार पर वह उसकी पहचान प्रयोग के समय पहले या बाद में विराम देकर करता है। जैसे- जब हम धीमी गति में बोलते हैं तो हम प्रत्येक स्वन-प्रक्रियात्मक शब्द की सीमा पर एक विराम लगाते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक प्रयोक्ता स्वन-प्रक्रियात्मक दृष्टि से परिभाषित शब्द के स्वनिक विकल्पों की अपनी भिन्न पहचान करता है, जैसे- 'बहन', 'बहिन'। हिंदी में हमें एक ही उपसर्ग से दो भिन्न शब्द संरचित मिलते हैं। उदाहरण के लिए- सह उपसर्ग जब एक ही शब्द 'अनुभूति' के साथ जुड़ता है तो एक ओर तो 'सह-अनुभूति' शब्द संरचित होता है और दूसरी ओर 'सहानुभूति।' इस प्रकार यौगिक शब्द एवं समास पद्धति द्वारा निर्मित शब्द में पर्याप्त भिन्नता है। हिंदी में स्वन और स्वन-प्रक्रियात्मक शब्दों के धरातल पर भी स्पष्ट भेद दिखायी देते हैं। जैसे- 'जनता'>'जन्ता'; 'लड़का'>'लड्का' आदि। इसी प्रकार हिंदी के एक ही लिखित शब्द के दो उपरूपों में भी विकल्प दिखाई देता है, जैसे- 'सन्गीत'> संगीत (क्योंकि हिन्दी में नासिक्य स्वनिम को स्वर के ऊपर अनुस्वार के रूप में या नासिकता के मूल्य के साथ वर्ण के रूप में लिखा जा सकता है)।

उपर्युक्त चर्चाओं के धरातल पर यह कहा जा सकता है कि भाषा की एक इकाई के रूप में शब्द को सबसे पहले भाषिक प्रतीक के रूप में देखना चाहिए और तत्पश्चात् उसे अभिव्यक्ति और कथ्य के संदर्भ में देखना चाहिए। इस प्रकार देखने पर हमें विभिन्न विशिष्टताओं के संयोजन, यथा- अभिव्यक्ति एवं कथ्य मिलेंगे जो अपने प्रकार्य में द्विचर और आयाम में द्विविध हैं। इस संदर्भ में हमें शब्दों के ये प्रकार मिलते हैं- एक शब्द (रूढ़ शब्द); सक्षम शब्द (योगरूढ़); यौगिक शब्द या सम्बन्धिम (समस्त पद) तथा द्वि या बहु शब्द-

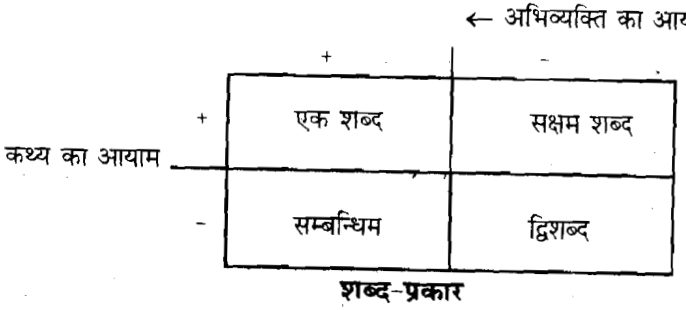


**शब्द-प्रकार**

'शब्द' को परिभाषित करने के सम्बन्ध में सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि यह एक बहुसंयोजक (multivalent) शब्द है और जिसके कारण इस भाषायी तत्त्व की कोई एक निश्चित परिभाषा दे पाना सम्भव नहीं है। कम-से-कम तीन भिन्न धारणाएँ 'शब्द' के संदर्भ में सर्वाधिक प्रचलित हैं। एक के अनुसार इसे कोशविज्ञान की इकाई माना जाता है जिसके आधार पर कोशीय शब्द की संकल्पना उभरती है, दूसरी धारणा शब्द को व्याकरणिक इकाई के रूप में स्वीकृत करती है जिसके आधार पर वाक्यात्मक एवं व्याकरणिक शब्दों की व्याख्या होती है और तीसरी धारणा शब्द को अभिव्यक्ति की इकाई के रूप में मान्यता देता है, जिसके आधार पर स्वन-प्रक्रियात्मक एवं वर्ण-विन्यासात्मक शब्द विवेचित किए जाते हैं। यदि भाषिक प्रतीक के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो कोशीय शब्दों को संकेतितों (signified) की इकाई माना जा सकता है, स्वन-प्रक्रियात्मक एवं वर्ण-विन्यासात्मक शब्दों को संकेतकों (signifier) की इकाई माना जा सकता है और वाक्यात्मक एवं व्याकरणिक शब्दों को संकेतन प्रकार्य की इकाई माना जा सकता है। 'इकाई' से यहाँ तात्पर्य विश्लेषण की दृष्टि से चुने गए उस लघुतम प्रकार्यात्मक रचना से है, जिसमें व्याख्या के पक्षों के समस्त मूलभूत गुण समाहित रहते हैं, जिसकी वह इकाई है (Srivastava, 1982)। इस प्रकार शब्द भाषिक रचना के धरातल पर क्योंकि बहुस्तरीय होता है, इसलिए स्वाभाविक है कि इसका अर्थ द्विअर्थिता से सम्पृक्त रहता है। द्विअर्थिता से बचने का मार्ग यही है कि सबसे पहले हम व्याख्या के उन पक्षों को विश्लेषित करें, जिनके आधार पर हम शब्द को एक प्रकार्यात्मक पद (term) के रूप में स्थापित करना चाहते हैं। 'शब्द' पर वैचारिक परिप्रेक्ष्य में विचार करने के पीछे केवल यह कारण नहीं है कि उसकी कोई निश्चित परिभाषा प्राप्त नहीं है बल्कि उसके पीछे वे तथ्य प्रभावी हैं जिनके कारण आज विभिन्न पक्षों एवं परिप्रेक्ष्यों को इसकी परिभाषा का आधार बनाया जा रहा है। इसी से सम्बद्ध एक और तथ्य भी है, जो 'शब्द' पर पुनर्विचार करने को उद्यत करता है और वह यह है कि विभिन्न पक्षों के आधार शब्द की विभिन्न परिभाषाएँ दी गई हैं, और जब हम एक ही सामग्री (DATA) पर इनमें से किन्हीं दो परिभाषाओं को लागू करके देखते हैं तो परिणाम विरोधी निकलते हैं।

यहाँ हमें शब्द की विभिन्न परिभाषाओं और उनके कारण उपजी असंगति पर व्यापक चर्चा कर लेनी चाहिए। वाक्यात्मक शब्द के रूप में 'उसे' और 'उसको' एक ही शब्द के दो विकल्प हैं, क्योंकि दोनों एक ही रूप वर्ग के शब्द हैं, जिनका सार्वनामिक अर्थ भी समान है, इसीलिए निम्नांकित दो वाक्यों को समानार्थी माना जाता है--

(12) उसे किताब दे दो।
(13) उसको किताब दे दो।

परन्तु स्वन-प्रक्रियात्मक शब्द के धरातल पर ये भिन्न हैं। वाक्य (12) में जहाँ विभक्ति '-ए' लगी है, वहीं वाक्य (13) में '-को' परसर्ग जुड़ा हुआ है। वर्ण-विन्यासात्मक शब्द के रूप में दोनों एक इकाई (mono-unit) हैं, क्योंकि दोनों ही वाक्यों में सार्वनामिक इकाइयों, विभक्तियों के बीच कोई विराम या स्थान (space) नहीं है। परन्तु हमारी लेखन-व्यवस्था ऐसी है कि एक ओर तो यह सर्वनाम + को (उसको) को एक शब्द बनाती है, दूसरी और संज्ञा + को (राम को) को दो भिन्न वाक्यात्मक शब्द मानती है। हिंदी में वर्तमान एवं भूतकाल को संकेतिक करने वाली सहायक क्रियाएँ लेखन के धरातल पर भिन्न शब्द के रूप में चिहिन्त की जाती हैं, जबकि भविष्यत् काल संकेतक क्रिया के साथ ऐसा नहीं होता: खाता है/ खाता था और खाएगा। यदि हम इनके घटकों की व्याकरणिक इकाई को वर्तनी के नियमों से जोड़कर देखें तो हमें इन दोनों संरचनाओं में सम्बद्धता भी दिखाई देती है-

वर्तमान/भूत : # # धातु + पक्ष + संज्ञापद # काल सहायक+संज्ञापद/वचन-लिंग # #
भविष्य: # # धातु + संज्ञापद + कला सहायक + वचन-लिंग # #

हिंदी के एक प्रख्यात वैयाकरण ने इस असंगति से बचने के लिए यह सुझाव दिया कि भविष्यत् काल सहायक क्रिया को लिखते समय 'काल सहायक + गा' के रूप में उसी प्रकार लिखा जाय जैसे वर्तमान भूत को # है # # था # के रूप में लिखा जाता है, परंतु इस प्रयत्न में उन्हें सफलता न मिल सकी। (वाजपेयी, 1966)। कई भाषा-वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर वाजपेयी के उपर्युक्त सुझाव को अस्वीकृत किया जा सकता है। हिंदी की इस प्रकृति से हम भली भाँति परिचित हैं कि उसमें दो शब्दों के बीच सन्निविष्ट करने का प्रचलन है। इस प्रकृति को हम इस संदर्भ में भी देख सकते हैं कि भविष्यत् काल सहायक + गा दो शब्दों की अभिव्यक्ति के स्थान पर एक ही शब्द है। नीचे दिए गए उदाहरणों को देखें–

(14 अ) तुम सोते थे।
(14 आ) तुम सोते भी थे।
*(14 इ) तुम सो भी ते थे।

(15 अ) तुम सो रहे थे।
(15 आ) तुम सो भी रहे थे (और जाग भी)
(16 अ) तुम सोओगे भी।
*(16 आ) तुम सोओ भी गे।

इस लेख का समापन मैं 'शब्द' की प्रकृति और स्थिति पर अपनी कुछ टिप्पणियों के साथ करना चाहूँगा, जिसके लिए मूलत: हिंदी के उदाहरणों को आधार बनाया गया है। इस भाषायी तत्व के प्रति हमारी भ्रांतियाँ केवल इस कारण नहीं हैं कि इसके बहुसंयोजक अर्थ एवं प्रकार्य हैं, वरन इसलिए भी हैं कि हम 'शब्द' को 'वस्तुगत भाषा' की इकाई मानकर उसका अध्ययन निरूपक भाषा (metalanguage) के अविभाज्य रूप में करना चाहते हैं। वस्तुगत भाषा की इकाई के रूप में शब्द को कभी भी सम्प्रेषणपरक मूल के रूप में नहीं रखा जा सकता; क्योंकि सम्प्रेषणपरक धरातल पर वाक्य या वाक्य से बड़ी इकाइयों को ही रखा जा सकता है। इस संदर्भ में हम कह सकते हैं कि यह कहना गलत है कि वाक्य शब्दों द्वारा रूप प्राप्त करते हैं, बल्कि इसकी जगह यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि विश्लेषण प्रक्रिया के माध्यम से वाक्यों द्वारा शब्द जन्म लेते हैं। तभी हम 'शब्द' के सम्बन्ध में यह भी कह सकते हैं कि उसका अपना मनोभाषा-वैज्ञानिक आधार है। इस प्रकार वस्तुगत भाषा की इकाई के रूप में 'शब्द' विशिष्ट भाषिक प्रक्रिया का परिणाम है।

हमारे परम्परागत वैयाकरणों ने वस्तुगत भाषा की इस इकाई को अपने भाषिक सिद्धांतों का रूप ग्रहण कराने का प्रयत्न किया (जैसे कि निरूपक भाषा)। वास्तविक व्यवहार में एक ही शब्द का वाक्य भी हो सकता है, एक स्वनिमिक शब्द भी है। उदाहरणार्थ '(तू) आ' जैसे वाक्य में शब्द 'आ' स्वनिम भी है और वाक्य भी। अपने विशिष्ट स्थान के साथ इस प्रकार की संक्रियात्मक युक्ति (device) को ही विचारों का स्वायत्त कर्म (autonomous object or thought) कहा गया है। कई गम्भीर भारतीय वैयाकरणों ने इस मूलभूत सैद्धांतिक इकाई 'शब्द' को भाषविश्लेषण का आधार बनाया और इस प्रकार वाक्य को 'शब्दों का समूह' मान लिया गया और शब्द-भेद (part of speech) को 'शब्द' वर्गों के रूप में परिभाषित किया गया। वास्तव में समस्त व्याकरण को उन नियमों का पर्याय मान लिया गया था जो शब्दों को एक वाक्य या उक्ति में नियंत्रित (regulate) करते हैं। (जैसे शब्दानुशासन)। परम्परावादी वैयाकरणों ने शब्द को उक्ति में पूर्णनिर्मित

अवयव के रूप में उस दशा में भी देखा जब वे किसी विशिष्ट भाषिक प्रक्रिया के परिणाम के रूप में सामने आते हैं। इस प्रकार देखने का कारण केवल इतना है कि वे शब्द को मात्र शब्दकोश के तत्व के रूप में देखते हैं (अमूर्त शब्दकोश), जो व्याकरण से नितांत भिन्न है। सैद्धांतिक धरातल पर भाषा को दो अनिवार्य और परस्पर आश्रित घटकों के रूप में देखा गया और दोनों घटकों को 'शब्दकोश' एवं 'शब्दानुशासन' की संज्ञा दी गई। यदि इस चिंतन की तुलना ट्रैगर (1949 : 5) के उस मत से की जाय जिसमें वे कहते हैं कि शब्दकोशविज्ञान सामान्यत: भाषाविज्ञान के क्षेत्र से निकलकर निरूपक भाषाविज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश करता है और ब्लूमफील्ड (1933 : 274) का मत है कि शब्दकोश वास्तव में व्याकरण का परिशिष्ट है।

निष्कर्ष स्वरूप निम्नलिखित टिप्पणियाँ इस संदर्भ में दी जा सकती हैं–

(क) 'शब्द' एक बहुसंयोजक स्थिति है जिसका प्रयोग एकाधिक अभिप्रायों में किया जाता है, अत: शब्द की कोई एक परिभाषा संभव नहीं है।

(ख) शब्द को भाषिक प्रतीक मानने वाले तीन पक्षों पर आधारित तीन अभिप्रायों, यथा– कथ्य (अर्थवैज्ञानिक), अभिव्यक्ति (स्वन-प्रक्रियात्मक एवं लेख) तथा संकेतन (वाक्यीय एवं व्याकरणिक) के अतिरिक्त 'शब्द' को शब्दकोश की प्रकार्यी इकाई के रूप में भी देखा जाता है। (जैसे-शब्दिम)। शब्दिम स्वनिम की भाँति ही मनोवैज्ञानिक वास्तविक सत्तायुक्त रहता है, और भाषिक रूढ़ि के रूप में भी। कई सिद्धांत इन विभिन्न विचारों, अभिप्रायों में भेद कर पाने में सदैव सक्षम नहीं होते, जिनमें 'शब्द' का प्रयोग किया गया है।

(ग) विभिन्न अभिप्रायों में 'शब्द' को परिभाषित करने के जो मानदंड प्रस्तुत किए गए हैं, वे संगत परिणामों की प्राप्ति में उपयोगी सिद्ध नहीं होते।

## संदर्भ

Beskrovny. V. M. 1960. O socetanijax glagol'nyx osnov xindi RAHANA (On combinations of Hindi verbal stems with rahana). Istoriyai filologiya. 81-103 Leningrad.

Bloomfield, L. 1933. Language. New york: Holt, Rinehart and Winston.

Chao, Y.R. 1968. Language and Symbolic Systems. Cambridge: University of Chicago Press.

Green berg, J.H. 1957. Essays in linguistics. Chicago : The University of Chicago Press.

Guru, K. P. 1920. Hindi vyakarana. Banaras: Kashi Nagari Pracharini Sabha.

Seventh Edition 1962.

Lyons, J. 1968. Introduction to Theoritical Linguistics. Cambridge: University Press.

Lyons, J. 1970. Introudctions, in New Horizons in Linguistics. ed. by J. Lyons. Penguin Books.

Mathews, P. H. 1974. Morphology: An Introduction to the Theory of wordstructure. Cambridge: University Press.

Palmer, F.R. 1976. Semantics: A new outline. Cambridge: University Press.

Sharma, A. 1958. A basic grammar of modern Hindi, Delhi: Central Hindi Directorate.

Srivastava, R.N. 1968. Review of: An Urdu newspaper word count. Linguistics 107. 64-73.

Srivastava, R.N. 1982. On the cross-conceptual diversity of linguistic terms. Papaer presented in the International Seminar on: In Search of terminology (Jan. 19-23, 1982), CIIL, Mysore.

Srivastava, R. N. and R.S. Gupta. 1968. Principles and problems in lexicology and lexicography as developed in the Soviet Union. Indian Linguistics 29. 113-132.

Srivastava, R.N. and S.K. Chopra 1983. Abbreviations and acronyms in Indian setting. J J D L XII. 2. 345-365.

Vajpeyi, K. D. 1966. Hindi Sabdanushasana, Banaras: Kashi Nagari Pracharini Sabha.